इंद्रप्रस्थ उद्घोष

राष्ट्रीय छात्रशक्ति

दिल्ली | गुरुवार | 7 दिसंबर, 2023 | विक्रम संवत् 2080 | मार्गशीर्ष नवमी | शक संवत् 1945

अग्र लेख

नए भारत की ओर

75 वर्ष। एक सुदीर्घ यात्रा। राष्ट्रजीवन के इतिहास में 75 वर्ष कुछ भी नहीं, लेकिन संस्थाओं के लिए यह अवधि महत्वपूर्ण है। विशेष रूप से तब, जब वह बिना अपनी प्रासंगिकता खोए निरंतर वर्धमान रहे। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद नाम है राष्ट्रीयता के भाव से निरंतर चेतना प्राप्त करने वाले उस युवा समूह का जो विगत अनेक पीढ़ियों से देश के छात्र-युवाओं के मनों का संस्कार कर उनकी ऊर्जा का नियोजन राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के कार्य में कर रहा है। विद्यार्थी संगठन से जुड़े, कार्यकर्ता बने, अपने भविष्य की दिशा पाकर समाज जीवन के विविध क्षेत्रों में गए। जहां भी गए, परिषद में कार्य करते हुए पाए राष्ट्रभक्ति के भाव को प्रसारित किया। अपने कार्यस्थान पर सेवा, समरसता और देशभक्ति के उदाहरण बन गए।

व्यक्तिगत रूप से अर्जित संस्कारों का सामूहिक प्रकटीकरण होता है। अधिवेशन जैसे राष्ट्रीय आयोजन में जहां एक मन, एक भाव से पूरित हजारों युवा एकत्र होकर संगठन के आगामी लक्ष्य निश्चित करते हैं। अन्य संगठनों की भांति यह उबाऊ और नीरस वार्षिक कर्मकाण्ड नहीं है। युवकोचित स्फूर्ति और ऊर्जा से भरपूर कार्यकर्ता समूह झूमते-गाते, भारत माता की जय और वन्देमातरम् के उदघोष करते अपने संकल्पों की सिद्धि की ओर बढ़ते जाते हैं। विविध भाषा-विविध वेश में सजे यह युवा भारत की समावेशी संस्कृति के जीवंत प्रतीक हैं। भारतविद्या के यूरोपीय विद्वान यदि एक लय-एक ताल में थिरकते हुए भी अपने-अपने कार्य को पूर्णता की ओर बढ़ाते हुए कार्यकर्ताओं के इन समूहों का दर्शन कर लें तो संभवतः उन्हें भारतीयता की खोज में धरती के भीतर खोद कर कुछ अवशेष पाने की इच्छा न रहे। हो सकता है कि हजारों वर्ष पूर्व के कतिपय प्रतीकों के विश्लेषण के स्थान पर भारतीय संस्कृति के इस जीवंत स्वरूप को ही अपने अध्ययन का विषय बना लें ताकि भारत को बेहतर ढ़ंग से समझ सकें।

इन विद्वानों के जटिल और कुटिल विश्लेषण की आभासी छाया में जो भारतीय विद्वान भी संस्कृति के प्रवाह को मिथक मान बैठे हैं, उनके लिए भी यह आयोजन आंखें खोल देने वाला हो सकता है। यह अवसर सोशल मीडिया पर हावी उन अफलातूनों के लिए भी सत्य का साक्षात्कार कराने वाला हो सकता है जो यह मान बैठे हैं कि इस देश के युवाओं की आंदोलनपरता अब ढ़ल चुकी है। लेकिन यह तभी संभव है जब वह इसे प्रत्यक्ष रूप से देखें, सुनें और समझने की कोशिश करें।

इस सब से इतर, परिषद का प्रत्येक अधिवेशन अपने-आप में अनूठापन लिए होता है। हर अधिवेशन एक नए लक्ष्य के साथ पूरा होता है। हर अधिवेशन राष्ट्रीय जीवन में कुछ-न-कुछ सकारात्मक योगदान देता है। हर अधिवेशन के बाद कार्यकर्ता एक नए सपने के साथ विदा होते हैं। एक नए संकल्प के साथ कार्यक्षेत्र में उतरते हैं, स्वामी विवेकानन्द के संदेश के अनुसार- नया भारत गढने के लिए। 69वां राष्ट्रीय अधिवेशन हम सबके सामने उपस्थित है। संभावना के नए द्वार खोले भारत युवाओं का आह्वान कर रहा है, उस क्षितिज का स्पर्श करने के लिए "जहां पूर्णता मर्यादा हो, सीमाओं की डोर नहीं"।

संपादक
आशुतोष भटनागर

संपादक-मण्डल
संजीव कुमार सिन्हा
अवनीश सिंह
अभिषेक रंजन
अजीत कुमार सिंह
उत्कर्ष श्रीवास्तव

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद का वार्षिक अधिवेशन

अमृत महोत्सव वर्ष में 69वें राष्ट्रीय अधिवेशन के लिए सज गया इंद्रप्रस्थ नगर

संजय दीक्षित

दिल्ली, 6 दिसंबर। देश की राजधानी दिल्ली के बुराड़ी क्षेत्र में स्थित डीडीए मैदान सज कर तैयार हो गया है। डीडीए मैदान में बनाए गए इंद्रप्रस्थ नगर में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) का 69वां राष्ट्रीय अधिवेशन 7 दिसंबर से लेकर 10 दिसंबर तक आयोजित किया जा रहा है। अमृत महोत्सव वर्ष में आयोजित किए जा रहे अधिवेशन के लिए लगभग 50 एकड़ भू-क्षेत्र में बनाए गए इंद्रप्रस्थ नगर में देश के 44 प्रांतों से अभाविप के कार्यकर्ता पहुंचने लगे हैं। अधिवेशन में देश के ही नहीं, बल्कि भारत में शिक्षा ग्रहण कर रहे कई देशों के छात्र भी हिस्सा लेंगे। आधिकारिक रूप से सम्मेलन गुरुवार से प्रारम्भ होगा, जबकि शुक्रवार को अधिवेशन में गृह मंत्री अमित शाह हिस्सा लेंगे।

देश के विभिन्न हिस्सों से आने वाले अभाविप कार्यकर्ताओं के लिए इंद्रप्रस्थ नगर में भव्य व्यवस्था की गई है और अधिवेशन स्थल को बारह हिस्सों में बांटा गया है, जिनके नाम संत ज्ञानेश्वर, अहिल्या बाई होलकर, लाचित बरफूकन, भगवान बिरसा मुंडा,मदन मोहन मालवीय, गुरु तेगबहादुर, सुब्रमण्यम भारती, महाराणा प्रताप, गुरु नानक देव, भगवान विश्वकर्मा, रानी दुर्गावती, रानी लक्ष्मीबाई, रानी मां गाईदिन्ल्यू के नामों पर रखे गए हैं। मुख्य द्वार से प्रवेश करते ही सबकी निगाह मुख्य सभागार पर टिक जाती है। लगभग दस हजार लोगों के लिए बनाए गए सभागार को तीन हिस्सों में विभाजित किया गया है। इस सभागार का नाम अभाविप के पूर्व अखिल भारतीय संगठन मंत्री एवं संघ के वरिष्ठ प्रचारक स्वर्गीय मदनदास देवी को समर्पित किया गया है। मुख्य सभागार के साथ ही इंद्रप्रस्थ नगर की व्यवस्था के लिए आंतरिक प्रशासन व्यवस्था, छात्र-छात्राओं के लिए अलग-अलग आवास व्यवस्था, अतिथि कक्ष, भोजन कक्ष, भण्डारण कक्ष, केंद्रीय टीम आवास, प्रबंधन आवास, मीडिया कक्ष, कर्मचारी आवास जैसी अनेक व्यवस्थाएं अलग-अलग ढंग से की गई है।

अधिवेशन स्थल पर अभाविप के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष स्वर्गीय दत्ताजी डिडोलकर पर केंद्रित एक विशेष प्रदर्शनी कक्ष भी बनाया गया है। इस प्रदर्शनी कक्ष का उद्घाटन गुरुवार को अभाविप के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष प्राध्यापक राजकुमार भाटिया तथा मूर्तिकार नरेश कुमावत द्वारा किया जाएगा।

अधिवेशन स्थल पर कई स्टाल भी लगाए जा रहे हैं, जहां विभिन्न प्रांतों से आने वाले अभाविप प्रतिनिधि अपने-अपने प्रान्त से जुडी उन विशेष वस्तुओं का प्रदर्शन करेंगे, जो उनकी संस्कृति को प्रदर्शित करेगी। इसके अलावा राष्ट्र एवं संस्कृति से जुडी पुस्तकों के भी स्टाल भी अधिवेशन स्थल पर होंगे, जहां पुस्तकों के प्रकाशक अभाविप प्रतिनिधियों को उनकी रूचि के अनुसार पुस्तकें उपलब्ध कराएंगे।

अधिवेशन स्थल में गुरुवार को फहराए जाने वाले ध्वज स्थल को विशेष रूप से बनाया गया है। ध्वज स्थल पर दिल्ली के पुराने किले के प्रारूप को दर्शाया गया है। गुरुवार को 8,500 विद्यार्थी एक साथ वंदे मातरम का सामूहिक गान करेंगे। इस दौरान 150 दृष्टिबाधित दिव्यांग छात्र तिरंगे के आकार में इस समूह का नेतृत्व करेंगे। वंदे मातरम सामूहिक गान में शामिल हो रहे विद्यार्थी अलग-अलग प्रदेशों का नेतृत्व करेंगे।

अधिवेशन के दौरान एक शोभायात्रा भी निकाली जाएगी, जोकि अधिवेशन स्थल से प्रारम्भ होकर मौरिस नगर तक जाएगी, जहां वह एक खुले अधिवेशन में परिवर्तित हो जाएगी। 1975 में मौरिस नगर से ही अभाविप ने भ्रष्टाचार के विरुद्ध आंदोलन प्रारम्भ किया था, जिसे लोकनायक जयप्रकाश नारायण ने सम्बोधित किया था। अधिवेशन में अलग-अलग कई सत्रों का आयोजन होगा तथा शिक्षा से जुड़े विभिन्न विषयों पर चर्चा की जाएगी। इसके अलावा प्रांतों से आने वाले प्रतिनिधियों के भी अलग-अलग सत्र होंगे, जिनमें प्रान्त के आधार पर विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की जाएगी।

इंद्रप्रस्थ नगर में मुख्य द्वार से लेकर छात्र-छात्राओं के लिए बनाए गए आवास के मार्ग पर महाभारत से सम्बंधित विभिन्न घटनाओं को दर्शाया गया है। छात्र आवास द्वार का नाम महाराजा सूरजमल को समर्पित किया गया है, जबकि छात्रों के लिए बनाए गए आवास के द्वार का नाम सम्राट मिहिर भोज के नाम पर रखा गया है। इसी तरह इंद्रप्रस्थ नगर के मुख्य सभागार का नाम अक्षरधाम के नाम पर है। अधिवेशन स्थल को जीरो प्रतिशत प्रदूषण एवं खाद्य पदार्थों की बर्बादी को पूरी तरह रोकने के लिए अभाविप के एक हजार कार्यकर्ताओं और लगभग दो सौ कार्यकर्ता स्वच्छता के लिए लगाए गए हैं। इन सभी का उद्देश्य उन सभी गतिविधियों को रोकने का है, जो पर्यावरण को नुकसान पहुंचा सकती हैं।

अभाविप के राष्ट्रीय मंत्री हुश्यार सिंह मीणा के अनुसार अधिवेशन के दौरान छह प्रस्ताव पारित किए जाएंगे, जिनमें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, भारतीय कूटनीति, स्वस्थ जीवन शैली, पर्यावरण अनुकूल विवेकशील विकास, नारी शक्ति वंदन एवं अयोध्या में भगवान श्रीराम के मंदिर एवं भारतीय स्वाभिमान पर केंद्रित होगा। इसके साथ ही भारत के गौरवशाली इतिहास और अनुपम विरासत की झलक राष्ट्रीय अधिवेशन में दिखाई देगी।

आज इंद्रप्रस्थ नगर पहुंचेगी हिंदवी स्वराज यात्रा

नई दिल्ली, 6 दिसंबर। छत्रपति शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक की 350वें वर्षगांठ के उपलक्ष्य में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) द्वारा हिंदवी स्वराज यात्रा आज राजधानी दिल्ली स्थित इंद्रप्रस्थ नगर पहुचेगी, जहां अभाविप के 69वें राष्ट्रीय अधिवेशन का आयोजन किया जा रहा है। महाराष्ट्र के रायगढ़ किले से गत 28 नवम्बर को प्रारम्भ हुई हिंदवी स्वराज यात्रा ने दिल्ली पहुंचने तक लगभग दो हजार किलोमीटर की दूरी तय की है। इस दौरान हिंदवी स्वराज यात्रा ने शिवनेरी, चालीसगांव, धुले, इंदौर, देवास, गुना, शिवपुरी झांसी, दतिया, ग्वालियर, मुरैना, धौलपुर, आगरा, मथुरा और नोएडा से गुजरी। इनमें वह स्थान भी शामिल हैं, जिनका शिवाजी के जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रहा है। यात्रा के दौरान सभी प्रमुख स्थानों पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन भी किया गया, जिसके माध्यम से युवाओं को छत्रपति शिवाजी महाराज के जीवन से जुड़े विभिन्न उदात्त पक्षों से अवगत कराया गया और कई स्थानों पर यात्रा का स्थानीय लोगों ने भव्य स्वागत भी किया। चूंकि यह वर्ष छत्रपति शिवाजी महाराज का राज्याभिषेक के 350वां वर्ष है। इसलिए 'हिंदवी स्वराज्य यात्रा' 75 किलों से संकल्पित की गई मिट्टी अपने साथ लेकर आई है। यात्रा के साथ शामिल अभाविप के अनेक कार्यकर्ता छत्रपति शिवाजी महाराज के सैनिकों की वेशभूषा में सम्मिलित हुए।

अभाविप केंद्रीय कार्यसमिति की बैठक संपन्न

नई दिल्ली, 6 दिसंबर। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) के 69वें राष्ट्रीय अधिवेशन से पहले अभाविप केंद्रीय कार्यसमिति की बैठक संपन्न हुई। बैठक में उद्यमिता, रोजगार सहित कई अन्य विषयों पर चर्चा की गई। बैठक प्रारम्भ होने से पहले अभाविप के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष स्वर्गीय पद्मनाभ आचार्य और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक स्वर्गीय रंगा हरि को श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

केंद्रीय कार्यसमिति की बैठक मंगलवार को सपन्न हुई, जिसमें देशभर से आए 77 प्रमुख कार्यकर्ताओं ने हिस्सा लिया। बैठक में राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. राजशरण शाही ने अभाविप के विभिन्न क्रियाकलापों का वृत्त केंद्रीय कार्यसमिति के सामने रखा।

राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. राजशरण शाही ने बताया कि सभी शैक्षणिक संस्थान ज्ञान का केंद्र बनें, इसके लिए प्रयास करने होंगे। अभाविप का कार्य देश के सभी शिक्षण संस्थानों में बढ़ा है और विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों में अभाविप के कार्य युवाओं को प्रेरित कर रहे हैं।

अभाविप के राष्ट्रीय महामंत्री याज्ञवल्क्य शुक्ल के अनुसार केंद्रीय कार्यसमिति की बैठक में देशभर के अलग-अलग राज्यों में शिक्षा, युवाओं के विषयों में हुए अभाविप के आंदोलनों पर विस्तार से चर्चा हुई।

दत्ताजी डिडोलकर को समर्पित प्रदर्शनी का उद्घाटन आज

नई दिल्ली, 6 दिसंबर। राजधानी में दिल्ली में आयोजित किए जा रहे अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) के 69वें राष्ट्रीय अधिवेशन में 7 दिसंबर से लेकर 10 दिसंबर तक एक विशाल प्रदर्शनी का आयोजन किया जा रहा है। अभाविप के संस्थापक सदस्य तथा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक रहे स्वर्गीय दत्ताजी डिडोलकर केंद्रित प्रदर्शनी में कुल आठ विषय रखे गए हैं। प्रदर्शनी को मूर्त रूप देने के लिए एक माह से अधिक समय से देश भर के अलग-अलग कला महाविद्यालयों के दो सौ विद्यार्थी तैयारियों में जुटे रहे। उन्होंने छत्रपति शिवाजी महाराज, दिल्ली के इतिहास, राष्ट्रीय एकात्मता तथा स्वाधीनता आंदोलन पर 160 से अधिक पेंटिंग बनाई हैं। प्रदर्शनी स्थल पर ही मिट्टी तथा बालू से अलग-अलग कलाकृतियां भी उकेरी जाएंगी। यह प्रदर्शनी राष्ट्रीय अधिवेशन में देशभर से हिस्सा लेने वाले हजारों विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा बनेगी।

अधिवेशन स्थल

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद
अमृत महोत्सव राष्ट्रीय अधिवेशन

महाराजा सूरजमल द्वार

महाराजा सूरजमल द्वार

राष्ट्रीय
अधिवेशन
अमृत महोत्सवी वर्ष
अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद
ABVP

#69th

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद
भूमिपूजन

: झलकियां ...

छायाकार : चमन गौतम

एक बहुआयामी व्यक्तित्व दत्ताजी डिडोलकर

अजीत कुमार सिंह

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक एवं अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) के सह-संस्थापक दत्ताजी डिडोलकर का जन्म शताब्दी वर्ष पूरे देश में धूमधाम से साथ मनाया जा रहा है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एवं अनेक समवैचारिक संस्थाओं के संस्थापक तथा आधार स्तम्भ विचार के दत्ताजी वाहक थे और उनका व्यक्तित्व, उनके जीवन दर्शन की अभिव्यक्ति था। आस्था, संकल्प, आदर्शों के प्रति प्रतिबद्ध दत्ताजी अपनी पूरी जिंदगी देश के लिए जिए।

7 अगस्त 1924 को बुलढाणा जिले में एक साधारण परिवार में जन्म लेने वाले दत्ताजी कम आयु में नागपुर चले गए और उन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा पटवर्धन हाई स्कूल से पूरी की। इसके बाद नागपुर विश्वविद्यालय से बीएससी की डिग्री के साथ स्नातक की उपाधि हासिल की। शिक्षा पूरी करने के बाद राष्ट्र के प्रति अपने दायित्व को पूरा करने के लिए वह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में जुड़ हो गए। स्वतंत्रता मिलने के बाद भारत के सामने कई चुनौतियां थीं। विशेष रूप से वैचारिक विरोध के कारण देश में भारतीयता की स्थापना कठिन थी। ऐसे में 1947 में उन्हें तत्कालीन मद्रास प्रांत में संघ के संगठनात्मक कार्य को पूरा करने के लिए भेजा गया। भाषाई समस्या के कारण दक्षिण के राज्यों में कार्य करना काफी जटिल था, लेकिन दत्ताजी मद्रास गए और वहां उन्होंने तमिल भाषा सीखी और संघ कार्य खड़ा किया।

लक्ष्योन्मुख एवं राष्ट्रवादी दत्ताजी के मन में बचपन से ही देशभक्ति की भावना कूट-कूट कर भरी थी। यही कारण रहा कि वह अपने जटिल से जटिल दायित्वों को पूरा करने में हमेशा सफल रहें, जो उन्हें सौंपे गए। वह केरल तथा तमिलनाडु में प्रचारक के रूप कार्यरत रहे और शाखा विस्तार का कार्य किया। वापस आने के बाद परिवार के दबाव के बावजूद वह घर-गृहस्थी के बंधन में नहीं फंसे और जीवन भर संगठन के जिस कार्य में उन्हें लगाया गया, पूर्ण मनोयोग से उसे करते रहे। 1949 में जब छात्र संगठन अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) की स्थापना हुई तो वह अभाविप के सह-संस्थापक बने। अभाविप के संस्थापक सदस्य होने के साथ ही वह लम्बे समय तक अभाविप के अध्यक्ष भी रहे। तत्कालीन समय में अभाविप को एक ऐसे प्रभावी अध्यक्ष की आवश्यकता थी, जो अभाविप के प्रचार-प्रसार के लिए काम कर सके। ऐसे में दत्ताजी ने अपने दायित्व का सफलतापूर्वक निर्वहन किया। उन्होंने अभाविप को अखिल भारतीय संगठन के रूप में स्थापित किया और अपने मजबूत

इरादों तथा कर्तत्व शक्ति के बल पर अभाविप के कार्य को देशव्यापी बनाया। उनके कार्यों को देखने वाले सरसंघचालक श्री गुरुजी ने आदर्श महापुरुष की चर्चा करते हुए एक बार कहा था कि वह कभी परिस्थिति का गुलाम नहीं बनता। उसके सामने घुटने नहीं टेकता, अपितु उससे संघर्ष कर अपने लिए निर्धारित कार्य को सिद्ध करता है। वह अशुभ शक्तियों को कभी अपनी शुभ शक्तियों पर हावी नहीं होने देता। इस कसौटी पर देखें, तो दत्ताजी सदा खरे उतरते हैं।

वामपंथियों के गढ़ केरल की राजधानी त्रिवेन्द्रम में अभाविप का सफल राष्ट्रीय अधिवेशन कराने वाले दत्ताजी का कहना था कि अभाविप किसी राजनीतिक दल की गुलामी के लिए नहीं बना है। बल्कि एक समय ऐसा आएगा, जब सब राजनीतिक दल ईर्ष्या करेंगे कि अभाविप जैसे कार्यकर्ता हमारे पास क्यों नहीं हैं? उनका यह कथन वर्तमान परिप्रेक्ष्य में पूरी तरह सही सिद्ध हुआ है क्योंकि उन्होंने जिस तरह से तत्कालीन समय में अभाविप के कार्यकर्ताओं को तैयार किया था, वह कार्यकर्ता आज राजनीति में प्रभावी भूमिका निभा रहे हैं।

गुरुजी से उनका रिश्ता काफी मजबूत था। बाला साहब देवरस, भाऊराव देवरस, यशवन्तराव केलकर की तरह दत्ताजी का व्यक्तित्व भी अत्यंत प्रभावशाली था। वह समावेशी, सामाजिक और आर्थिक एकता, संस्कृति पर आधारित, कार्यकर्ताओं के व्यक्तित्व को आकार देने का काम जिंदगी भर करते रहे। वह न केवल एक विद्वान वैचारिक मार्गदर्शक थे, बल्कि हर समय कार्यकर्ताओं के साथ खड़े रहने वाले सहृदय कार्यकर्ता भी थे। उन्होंने जरूरतमंदों को शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से एक गैर-व्यावसायिक निजी कोचिंग सेंटर जयंत ट्यूटोरियल की स्थापना की, जहां उन सभी छात्रों को शिक्षा प्रदान की जाती थी, जो आर्थिक रूप से कमजोर, पर बौद्धिक क्षमता के धनी थे। इस संस्था के माध्यम से उन्होंने अनेकों छात्रों की सहायता की। इसके पाठ्यक्रम में पढ़ाई के सामान्य विषय तो रहते ही थे, लेकिन कुछ अन्य विषयों के माध्यम से वह छात्र के अन्तर्निहित गुणों को उभारने का प्रयास करते थे। केवल पढ़ाना ही नहीं, वह अपने छात्रों की हर प्रकार की सहायता करने के लिए सदैव तत्पर रहते थे।

गुरुजी से उनका रिश्ता काफी मजबूत था। बाला साहब देवरस, भाऊराव देवरस, यशवन्तराव केलकर की तरह दत्ताजी का व्यक्तित्व भी अत्यंत प्रभावशाली था। वह समावेशी, सामाजिक और आर्थिक एकता, संस्कृति पर आधारित, कार्यकर्ताओं के व्यक्तित्व को आकार देने का काम जिंदगी भर करते रहे। वह न केवल एक विद्वान वैचारिक मार्गदर्शक थे, बल्कि हर समय कार्यकर्ताओं के साथ खड़े रहने वाले सहृदय कार्यकर्ता भी थे

कन्याकुमारी में विवेकानंद शिला स्मारक बनाने का निश्चय हुआ, तो दत्ताजी उस समिति के संस्थापक तथा फिर कुछ समय तक महामंत्री भी रहे। 1989 में जब संघ संस्थापक डा. हेडगेवार की जन्म शताब्दी मनाई गई, तो उसके क्रियान्वयन के लिए बनी समिति के भी वह केन्द्रीय सहसचिव थे। वह विश्व हिन्दू परिषद के पश्चिमांचल क्षेत्र के संगठन मंत्री भी रहे। इसी तरह जब छत्रपति शिवाजी महाराज के राज्यारोहण की 300वीं जयन्ती मनाई गई, तो उस समारोह समिति के भी दत्ताजी सचिव बने। विभिन्न पदों पर कार्य करते हुए उनके मन में कभी भी प्रसिद्धि की चाह नहीं रही। उन्होंने जो धन कमाया, उसका कुछ भाग अपने निजी उपयोग के लिए रखकर शेष सब संघ तथा उसकी संस्थाओं को दे दिया। उम्र होने के बाद वह नागपुर वापस लौट आए और 14 अक्टूबर 1990 को अपनी मृत्यु तक वहीं और उसके आसपास काम करते रहे।

"छात्रों को नई भूमिका के लिए तैयार कर रहा है थिंक इंडिया"

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) का प्रकल्प थिंक इंडिया भारत की उन्नत प्रतिभाओं को देश और समाज के लिए सोचने तथा उसके अनुरूप कार्य करने के लक्ष्य लेकर बनाया गया प्रकल्प है। यह प्रकल्प भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी), भारतीय प्रबन्धन संस्थान (आईआईएम), राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय (एनएलयू), अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एआईआईएमएस) जैसे विशिष्ट संस्थानों में छात्रों, शोधकर्ताओं, प्राध्यापकों एवं पूर्व विद्यार्थियों के बीच कार्य करता है। यह प्रकल्प राष्ट्रीय स्तर के अखिल भारतीय शिक्षण संस्थानों में विद्यार्थियों एवं विद्यार्थी समूहों का संगठन है। थिंक इंडिया की संयोजक प्रतीक सुथार एवं सहसंयोजक आकांक्षा वराडे हैं।

राष्ट्रीय छात्रशक्ति से हुई विशेष बातचीत में संयोजक प्रतीक सुथार कहते हैं कि थिंक इंडिया प्रकल्प छात्रों को नई भूमिका के लिए तैयार करने का दायित्व संभाल रहा है और यह देश के विशिष्ट शैक्षणिक एवं राष्ट्रीय संस्थान में कार्य कर रहा है। वह कहते हैं कि शिक्षा ग्रहण करते हुए विद्यार्थी उच्चतम स्तर पर पहुंचने के लिए विदेशी विश्वविद्यालयों एवं संस्थानों में पलायन कर जाते हैं। ऐसे में इस समस्या का समाधान करने और पलायन को रोकने के लिए ही अभाविप ने इस प्रकल्प का गठन किया हैं।

वह बताते हैं कि अभाविप का यह प्रकल्प 2006 में प्रारम्भ हुआ था। इस प्रकल्प को गठित करने का उद्देश्य भारत की बौद्धिक शक्ति को विदेश जाने से रोकना था, जिससे भारत की बौद्धिक शक्ति भारत के हितों एवं विकास के लिए अपने ही देश में सफलतापूर्वक कार्य करने के लिए आगे आए। प्रारम्भ में कार्य थोड़ा कठिन था, लेकिन धीरे-धीरे सफलता मिलती गई। 2011-12 के बाद भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) मुंबई और दिल्ली में भी कार्य प्रारम्भ हो गया।

थिंक इंडिया की सहसंयोजक आकांक्षा वराडे बताती हैं कि प्रकल्प अपने माध्यम से प्रशिक्षुओं को विदेश भेजता हैं, जिससे वह विदेश के संस्थानों में प्रशिक्षण लेकर वापस आए और भारत में आकर अपना कार्य करें। यह थिंक इंडिया प्रकल्प की सफलता ही कही जाएगी कि राष्ट्रीय महत्व के संस्थानों में प्रकल्प अपना काम सफलतापूर्वक कर रहा हैं। प्रकल्प के माध्यम से छात्रों के लिए छह प्रशिक्षण कार्यक्रम चला रहा है-जोकि विधि, नीति, अनुभूति, संसदीय, शुरूआत और संवाद नाम से है।

इन प्रशिक्षण कार्यक्रम में विधि कार्यक्रम क़ानूनी क्षेत्र से जुड़ा हुआ है, जबकि नीति प्रशिक्षण कार्यक्रम देश की नीतियों से सम्बंधित है। अनुभूति प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को नौकरी करने के स्थान पर नौकरी देने वाला बनाना है, जिससे सामाजिक और ग्रामीण क्षेत्र में सभी का भला हो सके। इसी तरह संसदीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रकल्प देश के सांसदों से संपर्क करके छात्रों को उनके साथ सहयोग करने के लिए मौका देता है और छात्र सांसद के संसदीय क्षेत्र में जाकर योजना के क्रियान्वयन के कार्य को देखते, समझते और करते हैं। शुरूआत प्रशिक्षण कार्यक्रम में छात्रों को नए-नए नवाचार करने और संवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रकाशन एवं मीडिया के साथ जुड़कर काम करने का मौका मिलता हैं। इसके साथ ही शोध एवं समीक्षा के लिए दीक्षा, हैरिटेज वाक, के साथ ही छात्र न्यायालय के ऐतिहासिक निर्णयों की समीक्षा भी करते हैं। आकांक्षा कहती हैं कि प्रकल्प अपना कार्य लगातार कर रहा है और जिस तरह से सफलता मिल रही है, उससे वह काफी उत्साहित हैं। प्रकल्प लगातार अपना विस्तार कर रहा है, जिससे परिणाम भी बेहतर होते जा रहे हैं। उम्मीद है कि आगामी वर्षों में प्रकल्प और अधिक सफलता प्राप्त करेगा।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद
स्थापना की पृष्ठभूमि

भारत विश्व के प्राचीनतम राष्ट्रों में से एक है और इसके पास हजारों वर्ष पुरानी एक संस्कृति निरंतरता के साथ विद्यमान रही है। किसी राष्ट्र की निर्मिति के लिए तीन तत्व आवश्यक माने जाते हैं-एक निश्चित भू-भाग, उसमें एकात्म भाव से रहने वाला समाज (जन) व उसके अंतःकरण में संबंधित भूमि के लिए श्रद्धाभाव एवं दीर्घकाल तक उनके एक साथ रहने के कारण उत्पन्न उनकी विकसित विशिष्ट संस्कृति।

यदि जन की बात करें तो उस निश्चित भूमि पर रहने वाला जन, अर्थात ऐसे लोग, जो लंबे समय से उस भूमि से जुड़े रहे हों (संसार में अधिकांश लोग जन्म से मृत्यु तक की जीवन-यात्रा, पारिवारिक यात्राएं, रहन-सहन, खान-पान, वेश-भूषा बोली-भाषा, पंथ-संप्रदाय आदि की गतिविधियों की दृष्टि से पीढ़ी-दर-पीढ़ी किसी विशिष्ट भू-भाग से संबद्ध रह कर परस्पर एकत्व का अनुभव करने लगते हैं), ऐसे लोग जब परस्पर गुंथा हुआ अनुभव करने लगते हैं, तब उस संपूर्ण समाज, भूमि, उनकी अपनी परंपराओं, अस्मिता इत्यादि को क्षति पहुंचाने वाले अथवा संपोषित-संवर्द्धित करने वाले शेष मानव समूहों के प्रति क्रमशः शत्रु एवं मित्र का भाव समान रूप से विकसित हो जाता है। वस्तुतः उपर्युक्त सभी लक्षण एक राष्ट्र की अस्मिता को आधार प्रदान करते हैं।

मनुष्य एक विचारशील प्राणी है, जिसका व्यक्तित्व चिंतन-मनन करने की क्षमता, आकांक्षाओं तथा संवेदनाओं जैसे तत्वों से युक्त होता है। सभी मनुष्यों के व्यक्तित्व समान नहीं होते और उनमें भिन्नता होना प्रकृति का नियम है, परंतु मनुष्य एक सामाजिक-सांस्कृतिक प्राणी भी है, इसलिए वह अकेले में नहीं जीता। केवल पति-पत्नी की न्यूनतम सामाजिक इकाई से लेकर एकल परिवार, संयुक्त परिवार, ग्राम, जनपद, प्रदेश, देश, राष्ट्र, विश्व जैसी क्रमशः बड़ी इकाइयाँ और जाति, भाषा, मत-पंथ-संप्रदाय, व्यवसाय आदि के आधार पर भी मनुष्यों की सामाजिक श्रेणियां बनती हैं। भिन्न-भिन्न व्यक्तित्वों वाले मनुष्यों में जब एक स्तर का सामंजस्य निर्माण होता है तो एक विशिष्ट समाज बनता है, परंतु किसी भू-भाग पर रहने वाला समाज जब चिंतन-मनन, आकांक्षाओं और संवेदनाओं के स्तर पर एकता एवं सामंजस्य की अनुभूति करता है तो वह एक राष्ट्र बन जाता है। सामंजस्य की ऐसी विशिष्ट अनुभूति दिनों, महीनों अथवा कुछ वर्षों में निर्मित नहीं होती, उसके लिए तो सदियां और सहस्त्राब्दियां लग जाती हैं।

भारत में दीर्घकालीन जीवन में अनेक विद्वान द्रष्टा एवं ऋषि-मुनि हुए, जिन्होंने विज्ञान-प्रकृति व सृष्टि-ब्रह्मांड के गूढ़ रहस्यों का न केवल सफलतापूर्वक उद्घाटन किया, अपितु उस ज्ञान के आधार पर यहां रहने वाले समाज को सुखी एवं सामंजस्यपूर्ण जीवन निर्वाह करने हेतु जीवन-मूल्य प्रदान किए। भारत के राष्ट्रीय जीवन में अनेक मूल्यों के आधार पर सामंजस्य स्थापित हुआ, जिनमें आध्यात्मिकता को सर्वोच्च मूल्य माना गया और भारत एक आध्यात्मिक राष्ट्र के रूप में विश्व-पटल पर स्थापित है।

भारत के राष्ट्रीय जीवन में एक और विशेषता उभर कर आई, वह थी अनेक शासन-पद्धतियों (राज्यों) एवं शासकों को एक साथ स्वीकार करने वाला राष्ट्र। भौगोलिक स्तर पर परस्पर संबद्ध एवं विस्तृत भू-खण्ड पर रहने वाला, लगभग एक समान जीवन-मूल्यों में आस्था रखने वाला तथा परस्पर सामंजस्य से चलने वाला अनेक राज्य-रूपों में संचालित एकात्म समाज बना भारत राष्ट्र। एकात्म समाज की भारतीय राष्ट्र की यात्रा बहुत लंबी चली और इसी यात्रा के दौरान भारत विश्वगुरु एवं सोने की चिड़िया कहलाया। चाहे ज्ञान-विज्ञान का क्षेत्र रहा हो अथवा आर्थिक संपन्नता व उच्चतम जीवन-मूल्यों के आचरण का, सभी क्षेत्रों में भारत शिखर पर पहुंचा हुआ था। परंतु फिर एक समय ऐसा आया, जब भारत की यह स्थिति नहीं रही। कालक्रम में भारत पर अनेक आक्रमण भी हुए। कुछ आक्रांता (हूण, शक आदि) यहां विफल हुए तो कुछ (मुगल एवं अंग्रेज) सफल हो गए। विश्व के निकट इतिहास में एक समय आया, जब चारों ओर इस्लाम की आंधी चली, जिसने भारत में भी प्रवेश किया। परिणामस्वरूप जहां एक ओर ईरान और अफगानिस्तान इस्लामिक राज्य बन गए, वहीं इस्लाम की आंधी के पश्चात यूरोपीय विस्तारवाद ने विश्व में अपने पाँव फैलाए।

मुगल एवं अंग्रेज भारत के संपूर्ण राष्ट्रीय जीवन को नष्ट नहीं कर पाए, यद्यपि उन्होंने यहां की संस्कृति को समाप्त करने का पूरा प्रयास किया I भारतीय जन ने उनसे भरपूर लोहा लिया और अपने जीवन-मूल्यों पर अधिक आंच नहीं आने दी।

भारतीय जन की एक आंतरिक विकृति ने भारत को पराधीन बनाया और वह थी, समाज में व्याप्त हुई आत्म-विस्मृति, जिसके कारण पारस्परिक एकता एवं एकात्मता के भाव क्षीण हो गए। विभिन्न राज्यों में रहने वाले जन ने समान शत्रु-मित्र की भावना का विवेक खो दिया। कहीं आपस में ही उसमें शत्रुता उत्पन्न हो गई, तो कहीं आक्रांताओं का वह साथ देने लगा। इस विकृति ने भारत को राजकीय स्तर पर भी खंडित किया। ईरान और अफगानिस्तान तो बहुत पहले भारत से टूट चुके थे, परंतु बीसवीं सदी के चौथे दशक में श्रीलंका और ब्रह्मदेश (म्यांमार) अलग हुए और 1947 में पाकिस्तान (आज के पाकिस्तान और बांग्लादेश) अलग हो गया।

दीर्घकालिक विदेशी दासता के पश्चात् 15 अगस्त, 1947 को खंडित भारत स्वाधीन हुआ। भारत की राष्ट्रप्रेमी जनता के सामने अब एक नया लक्ष्य था-राष्ट्रीय पुनर्निर्माण। गौरवशाली इतिहास एवं संस्कृति का वाहक एक प्राचीन राष्ट्र, जिसका अनेको स्तरों पर पतन भी हुआ था, इसलिए जिसे दासता का शिकार होना पड़ा था-उसका फिर से निर्माण।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ-स्थापना

वास्तव में निर्माण का यह कार्य पुनर्निर्माण का कार्य था। भारत, जो सांस्कृतिक आधार पर तो प्राचीन राष्ट्र था, किंतु जिसका राजनीतिक स्वाधीनता के वातावरण में फिर से निर्माण होना था। पुनर्निर्माण के इस कार्य को एक संगठन 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ' ने एक प्रकार से पराधीनता के काल में ही, 1925 से प्रारंभ कर दिया था। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने दो लक्ष्यों पर एक साथ कार्य प्रारंभ किया था। जहां एक ओर उसने स्वाधीनता-प्राप्ति के लक्ष्य को महत्वपूर्ण माना, वहीं पराधीनता के मूल कारणों के निराकरण पर भी अपना ध्यान केन्द्रित किया। एक स्वयंसेवी संगठन के रूप में भारत के सार्वजनिक जीवन में 1947 में संघ भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा था। उसी क्रम में स्वाधीनता-प्राप्ति के पश्चात् उसने अपनी भूमिका निश्चित की। संघ ने माना कि पुनर्निर्माण के कार्य की आवश्यकता सभी मोर्चों पर थी, जैसे-आर्थिक, प्रशासनिक, सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षिक इत्यादि। संघ ने यह भी माना कि देश के सभी आयु वर्गों की शक्ति पुनर्निर्माण के कार्य में लगनी चाहिए। उसको यह भी अनुभव हुआ कि देश के महाविद्यालयीन विद्यार्थियों को एक संगठन के रूप में इस कार्य में लगाना चाहिए।

यद्यपि संघ ने मात्र सैद्धांतिक तौर पर ही यह सोचा था, परंतु 1948 में महात्मा गाँधी की हत्या के कारण संघ को जब प्रतिबंध झेलना पड़ा, तो उसने तुरंत ही छात्र-संगठन बनाने की पहल की। परिणामतः जून 1948 में 'अभाविप' का जन्म हुआ। जुलाई 1948 के 'पांचजन्य' समाचार-पत्र ने एक विज्ञप्ति को प्रकाशित करते हुए लिखा-'विभिन्न विद्यार्थी संगठनों की दलबंदी एवं घृणित राजनीति से ऊब कर देश के प्रगतिशील तत्वों ने अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद' संगठन बनाने का निश्चय किया है। इस प्रकार अभाविप का सोसाइटी के रूप में विधिवत् पंजीयन 9 जुलाई 1949 को हुआ। इसकी प्रथम कार्यसमिति के अध्यक्ष ओम प्रकाश बहल एवं महामंत्री केशव देव शर्मा बनाए गए थे। इन्हीं दिनों पंजाब और जम्मू में राष्ट्रवादी विचारों से प्रेरित स्टूडेंट्स नेशनलिस्ट एसोसिएशन (एस.एन.ए.) नाम से एक अन्य संगठन भी अस्तित्व में आया था, जिसने आगे चलकर 1952 में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद में अपना विलय कर लिया।

(पुस्तक 'ध्येय यात्रा' के संपादित अंश)